D-001-001302 Seat No. _____

B. A. (Sem. III) (CBCS) Examination

March - 2022

Hindi : Paper-3 (Compulsory)

(Sapt Ekanki Vyakaran) (Old Course)

Faculty Code : 001
Subject Code : 001302

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : (1) सभी प्रश्नों के अंक समान है ।
(2) सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1 एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'पृथ्वीराज की आंखें' एकांकी का मूल्यांकन कीजिए । **14**

अथवा

1 भगवतीचरण वर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व स्पष्ट कीजिए । **14**

2 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का कथासार एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए । **14**

अथवा

2 'दो कलाकार' एकांकी के प्रमुख दो पात्रों का चरित्र चित्रण कीजिए । **14**

3 'रीढ की हड्डी' एकांकी में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए । **14**

अथवा

3 एकांकी की परिभाषा बताते हुए एकांकी के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए । **14**

4 टिप्पणियाँ लिखें : (किन्हीं दो) **14**

(1) कालिंदी का चरित्र चित्रण

(2) 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का शीर्षक

(3) ममता कालिया का संक्षिप्त परिचय

(4) 'पृथ्वीराज की आंखें' एकांकी का नायक

5 पत्र–लेखन कीजिए :

(अ) गुजरात आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज अहमदाबाद, हिंदी विषय के अध्यापक के रिक्त स्थान के लिए आवेदन पत्र लिखिए । 7

अथवा

(अ) राजकोट महानगर पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को शहर में फैले कोरोना वायरस रोकने के लिए पत्र लिखिए । 7

(ब) निम्नलिखित परिच्छेद का सार–लेखन कीजिए : 7

आजकल अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञान की शिक्षा देने पर जो ज़ोर दिया जा रहा है, वह कदापि उचित नहीं है । विज्ञान एक व्यवहारिक विषय है । इसलिए इसका ज्ञान व्यवहार और अभ्यास से होता है । हिन्दी को विज्ञान की शिक्षा का माध्यम मान लेने में कोई हानि नहीं है । विज्ञान को सही अर्थ में अनिवार्य विषय बनाना बहुत आवश्यक हो गया है, क्योंकि इसका उपयोग प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, हिन्दी में विज्ञान की अच्छी पुस्तकों की रचना होनी चाहिए । यदि केवल अंग्रेजी में लिखी गई पुस्तकें विज्ञान की शिक्षा के लिए अनिवार्य मानी जाएंगी, तो ऐसी दशा में बहुत से विद्यार्थियों को इस विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकेगा । वे केवल विषय को रट सकेंगे, परंतु उसका पूरा बोध उन्हें नहीं होगा तथा उनका दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक नहीं बन सकेगा ।

अथवा

(ब) निम्नलिखित परिच्छेद का सार–लेखन कीजिए । 7

यह देश हमारे पूर्वजों का परम आराध्य रहा है । उनकी सभी साधनाएँ, सभी उद्योग, सभी कामनाएँ देश को सुखी और समुन्नत बनाए रखने के लिए हुआ करती थी । इस प्रकार उनकी देशभक्ति चरमकोटि की थी । उनकी राष्ट्रीयता देश की मिट्टी और जल तक को परम आराध्य मानती थी । वही परंपरा आज भी रूढिरूप में विद्यमान है । हम अब भी गंगा, यमुना आदि नदियों के पवित्र जल का पान करते और उनकी मिट्टी को श्रद्धापूर्वक खाते है । किंतु इसके भीतर छिपे हुए रहस्य (राष्ट्र–भक्ति) को नहीं समझते । देश को अखंड बनाए रखने के लिए हमारे पूर्वजो ने अपने देश की समस्त नदियों को तीर्थ या दैवीरूप में मानकर उनकी प्रतिदिन उपासना और स्मरण करने का धार्मिक नियम बनाया था, जो अब भी प्रचलित है । वेदों से लेकर काव्यों तक जितने भी शास्त्र हैं, सभी इस देश–संबंधी एकता की नीति को धर्म का रूप दिया गया है ।